समाजवादी समाज की स्थापना में दलित समुदाय का महत्व :– एक विवेचना

डॉ0 प्रमोद कुमार

समाजिक सक्षमता के बिना किसी राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती। एक राष्ट्र के रूप में खुद को ढालने के लिए हमें जिस सामाजिक सक्षमता की जरूरत थी,वह दलित वर्गो के सहयोग के बिना कत्तई हासिल नहीं की जा सकती। उन्हें आगे आ कर सामाजिक सोपान मे अपना समुचित स्थान ग्रहण करना होगा। तभी हम पुरी सच्चाई के साथ खुद को एक राष्ट्र कह सकेंगे। परन्तु इसका अर्थ यह कत्तई नहीं निर्धारित किया जाना चाहिए की बहुसंख्य समाज को हासिये पर डाल दिया जाए। यदि किसी देश का बहुसंख्य समाज दलित हो जाए तो वह देश हीं दलित हो जाएगा। प्रजातंत्र की यह सीधी मांग है कि किसी देश या क्षेत्र का बहुसंख्य समाज सिर उठा कर चलने की स्वतंत्रता रखे। ब्रिटिश कालिन शासकों नें तो अल्पसंख्यकों की सहायता हीं इस शर्त पर की थी कि विदेशी शासन बहुसंख्यको पर अपना प्रभुत्व कायम रख सके। यही इस महान देश के लिए एक भारी अभिश्राप है। जो कोई भी इस नीति का समर्थक या पोषक है,वह प्रजातंत्र का शत्रु है। सच था कि दलित समाज के मुख्य धारा में थे लेकिन वे सब में सम्मिलित नहीं थे एवं जो चीज काफी महत्त्व रखती थी और जिसे प्रमुखता से सामने लाने की जरूरत थी, वह यह की हमारी राष्ट्रीय परंपरा, राष्ट्रीय इतिहास और राष्ट्रीय शास्त्र भी हमारे पक्ष में थे। स्वामी दयानन्द ने यह प्रमाणित किया है। लाला जी जितना आर्य समाज के दर्शन से प्रभावित थे, उतना शहीदे आजम भगत सिंह नहीं थे। सच तो यह है कि शहीदे आजम भगत सिंह धर्म से बहुत ऊपर थे। उनका मानना था कि गरीबी के बीच धर्म एक ऐसा पचड़ा है जिससे मनुष्य भाग्यवादी बन जाते हैं, जबकी मनुष्य को कर्मवादी बनना चाहिए।